ज़िक्र की मज़लिसों की फ़ज़ीलत से संबंधित हदीसें

अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः “अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते हैं ,जो रास्तों में घूमते रहते हैं और ज़िक्र करने वालों को तलाशते रहते हैं। जैसे ही कहीं ज़िक्र करने वालों को पाते हैं, एक-दूसरे को आवाज़ देकर बुलाते हुए कहते हैं कि आओ, यहाँ तुम्हारे मतलब की चीज़ है। फिर वे उन्हें अपने परों से आसमान तक घेर लेते हैं। उस समय उनसे उनका रब पूछता है, जबकि वह स्वयं सब कुछ जानता है : मेरे बंदे क्या कह रहे हैं? फ़रिश्ते जवाब देते हैं : वे तेरी पवित्रता बयान कर रहे हैं तथा तेरी प्रशंसा और बड़ाई का वर्णन कर रहे हैं। तब अल्लाह तआला फरमाता है : क्या उन्होंने मुझे देखा है? फ़रिश्ते कहते हैं : नहीं, अल्लाह की क़सम! उन्होंने तुझे देखा नहीं है। अल्लाह फ़रमाता है : यदि वे देख लेते तो क्या होता? फ़रिश्ते कहते हैं : यदि देख लेते तो इससे भी अधिक तेरी इबादत करते और इससे भी ज़्यादा तेरी बड़ाई तथा पवित्रता बयान करते। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है : मेरे ये बंदे क्या माँग रहे हैं? फ़रिश्ते कहते हैं : वे तुझसे जन्नत माँग रहे हैं। अल्लाह कहता है : क्या उन लोगों ने जन्नत देखी है? फ़रिश्ते कहते हैं : नहीं, अल्लाह की क़सम! नहीं देखी है। अल्लाह फ़रमाता है : यदि देख लेते तो क्या होता? फ़रमाया : फ़रिश्ते कहते हैं : यदि देख लेते तो इससे भी अधिक उसकी ख़्वाहिश करते और इससे भी ज़्यादा उसे हासिल करने की कोशिश करते और उसके प्रति उनकी रूचि और अधिक बढ़ जाती। अल्लाह फ़रमाता है : वे किस चीज़ से शरण माँग रहे है? फ़रिश्ते कहते हैं : जहन्नम से शरण माँग रहे हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है : क्या उन्होंने जहन्नम देखा है? फ़रिश्ते कहते हैं : नहीं, अल्लाह की क़सम! उन्होंने जहन्नम को नहीं देखा है। अल्लाह तआला फ़रमाता है : यदि वे जहन्नम को देख लेते तो क्या होता? फ़रिश्ते कहते हैं : यदि वे जहन्नम को देख लेते तो इससे भी अधिक उससे भागते और भय करते। अल्लाह तआला फ़रमाता है : मैं तुम्हें साक्षी बनाता हूँ कि मैंने इन्हें क्षमा कर दिया है। फ़रमाया : एक फ़रिश्ता कहता है : उनमें अमुक भी है, जो उनमें से नहीं है, बल्कि किसी ज़रूरत के तहत आया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है : ये ऐसे साथ बैठने वाले लोग हैं कि उनके साथ बैठने वाले लोग भी वंचित नहीं रहते। एक दूसरी रिवायत में है : अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : “अल्लाह के कुछ चलते-फ़िरते फ़रिश्ते हैं, जो ज़िक्र की मजलिसें तलाश्ते रहते हैं। जैसे ही कोई ज़िक्र की मजलिस मिलती है, लोगों के साथ बैठ जाते हैं और अपने परों से उन सबको ढाँप लेते हैं, यहाँ तक कि उनके और आसमान के बीच की जगह भर जाती है। जब मजलिस ख़त्म हो जाती है और लोग बिखर जाते हैं, तो वे आसमान पर चले जाते हैं। तब अल्लाह तआला उनसे पूछता है (हालाँकि वह उनसे ज़्यादा जानने वाला है) कि तुम लोग कहाँ से आ रहे हो? फ़रिश्ते कहते हैं कि हम ज़मीन पर मौजूद तेरे कुछ बंदों के पास से आ रहे हैं जो तेरी पवित्रता, बड़ाई और प्रशंसा बयान कर रहे हैं और तुझसे माँग रहे हैं। अल्लाह कहता है : वे क्या माँग रहे हैं? फ़रिश्ते कहते हैं : वे तुझसे तेरी जन्नत माँग रहे हैं। अल्लाह कहता है : क्या उन्होंने मेरी जन्नत देखी है? फ़रिश्ते कहते हैं : नहीं ऐ रब। अल्लाह कहता है : यदि वे मेरी जन्नत देख लेते तो क्या होता!! फ़रिश्ते कहते हैं : वे तेरी शरण माँग रहे हैं। अल्लाह कहता है : वे किस चीज़ से मेरी शरण माँग रहे हैं? फ़रिश्ते कहते हैं : तेरी जहन्नम की आग से, ऐ रब। अल्लाह कहता है : क्या उन्होंने मेरे जहन्नम की आग देखी है? फ़रिश्ते कहते हैं : नहीं। अल्लाह फ़रमाता है : यदि वे मेरे जहन्नम की आग देख लेते तो क्या होता!! फ़रिश्ते कहते हैं : वे

[illegible]

[illegible] [illegible]

http://sunnah.global/hadeeth/hi/show/8272